ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीहरेरामभजन

सभी रसायन हम करी नहीं नाम सम कोय।
रंचक घटमें संचरे सब तन कञ्चन होय॥
जब ही नाम हृदय धर्‌यो भयो पापको नास।
मानौ चिनगी अग्निकी परी पुराने घास॥
जागनसे सोवन भला जो कोइ जाने सोय।
अन्तर लव लागी रहै सहजे सुमिरन होय॥
लेनेको हरि नाम है देनेको अन्न दान।
तरनेको आधीनता डूबनको अभिमान॥

कबिरा सब जग निर्धना धनवन्ता नहिं कोय।
धनवन्ता सोइ जानिये जाहि नाम धन होय॥
सुखके माथे सिल पड़ो जो नाम हृदयसे जाय।
बलिहारी वा दुःखकी जो पल-पल नाम जपाय॥
सुमरनकी सुध यों करो ज्यों सुरभी सुत माँहिं।
कह कबीर चारो चरत बिसरत कबहूँ नाहिं॥
सुमरन सों मन लाइये जैसे कीड़ा भृङ्ग।
कबिर बिसारे आपको होय जाय तिहिं रङ्ग॥
सुमरन सुरत लगायकर मुखते कछू न बोल।
बाहरके पट देय कर अन्तरके पट खोल॥

मन फुरनासे रहित कर जाही विधिसे होय।
चहै भगति चहै ध्यान कर चहै ज्ञानसे खोय॥
केशव केशव कूकिये ना कूकिये असार।
रात दिवसके कूकते कबहुँ तो सुनै पुकार॥
आज कहै मैं कल भजूँ काल कहै फिर काल।
आज कालके करत ही औसर जासी चाल॥
काल भजन्ता आज भज आज भजन्ता अब्ब।
पलमें परलय होयगी फेर भजेगा कब्ब॥
इस औसर चेता नहीं पशु ज्यों पाली देह।
राम नाम जाना नहीं अन्त परी मुख खेह॥

राम नाम जाना नहीं पाला सकल कुटुम्ब।
धन्धे ही में पचि मरा बार भई नहिं बुम्ब॥
पाँच पहर धन्धे गया तीन पहर रहा सोय।
एक पहर हरि ना जप्या मुक्ति कहाँ ते होय॥
धूमधाममें दिन गया सोचत हो गयी साँझ।
एक घरी हरि ना भज्या जननी जनि भइ बाँझ॥
कबिरा यह तन जात है सकै तो ठौर लगाय।
कै सेवा कर साधुकी कै गोविन्द गुन गाय॥
दुनियाँ सेती दोसती होय भजनमें भङ्ग।
एका एकी रामसे कै साधुनके सङ्ग॥

उज्ज्वल पहिरे कापड़ा पान सुपारी खाय।
एकहि हरिके नाम बिनु बाँधा जमपुर जाय॥
जप तप संयम साधना सब सुमिरनके माँहिं।
कबिरा जानै राम जन सुमिरन सम कछु नाहिं॥
राजा राना राव रँक बड़ा जो सुमरे राम।
कह कबीर बन्दा बड़ा जो सुमरे निष्काम॥
सुमरनसे मन लाइये जैसे दीप पतङ्ग।
प्राण तजै छिन एकमें जरत न मोरै अङ्ग॥
चिन्ता तो हरि नामकी और न चितवै दास।
जो कछु चितवै नाम बिनु सोई कालकी फाँस॥

कबिरा हरिके नाममें बात चलावे और।
तिस अपराधी जीवको तीन लोक कित ठौर॥
राम नामको सुमरते उधरे पतित अनेक।
कह कबीर नहिं छाड़िये राम नामकी टेक॥
राम नामको सुमरते अधम तरै संसार।
अजामिल गनिका स्वपच सदना सबरी नार॥
बाहर क्या दिखराइये अन्तर जपिये राम।
कहा काज संसारसे तुझे धनीसे काम॥
रग रग बोले रामजी रोम रोम रङ्कार।
सहजै ही धुनि होत है सो ही सुमिरन सार॥

सहजै हि धुनि लगि रही कह कबीर घट माँहिं।
हिरदय हरि हरि होत है मुखकी हाजत नाहिं॥
अजपा सुमरन घट बिषय दीन्हा सिरजनहार।
ताही सो मन लगि रहा कहै कबीर बिचार॥
राम नामको सुमर ले हँसि कै भावै खीज।
उलटा सुलटा ऊपजै ज्यों खेतनमें बीज॥
साँस सुफल सोइ जानिये हरि सुमिरनमें जाय।
और साँस यों ही गये करि करि बहुत उपाय॥
जाकी पूँजी साँस है छिन आवे छिन जाय।
ताको ऐसो चाहिये रहै राम लौ लाय॥

कहा भरोसो देहको बिनसि जात छिन माँहि ।
साँस-साँस सुमरन करो और यतन कछु नाहिं ॥
जीवन थोरा ही भला जो हरि सुमरन होय ।
लाख बरसका जीवना लेखे धरै न कोय ॥
कहता हूँ कहि जात हूँ सुनता है सब कोय ।
सुमरनसों भल होयगा नातर भला न होय ॥
कबिरा सूता क्या करै जागो जपो मुरारि ।
एक दिना है सोवना लंबे पाँव पसारि ॥
कबिरा मुख सो हीं भलो जा मुख निकसै राम ।
जा मुख राम न नीकसै सो मुख है किस काम ॥

कथा कीरतन कलि बिषे भवसागरकी नाव ।
कह कबीर या जगतमें नाहीं और उपाव ॥
देह धरेका फल यही भज मन कृष्णमुरार ।
मनुषजनमकी मौज यह मिलै न बारम्बार ॥
कृष्णनाम गुन गुप्तधन पावै हरिजन संत ।
करे नहीं जो कामना दिन-दिन होय अनन्त ॥
महिमा माधव नामकी किन्हे न पाया पार ।
विधि हर शारद शेष सुर नारद सनतकुमार ॥
अब नर मनमें चेत कर काया कच्चा कोट ।
जम तोड़ैंगे पलकमें ना कछु इसके ओट ॥

आया था कछु लाभको खोय चल्या सब मूल।
फिर जाओगे सेठ पाँ पलै पड़ैगी धूल॥
ज्यूँ तीरथ मेला मँडा मिला आय संयोग।
आप आपने जायँगे सभी बटाऊ लोग॥
परनिन्दा परद्रोहमें दिया जनम सब खोय।
कृष्ण नाम सुमरा नहीं तिरना किस बिध होय॥
धन जौबन यों जायँगे जा बिधि उड़त कपूर।
नारायण गोपाल भज क्यों चाटै जगधूर॥
नारायण सतसङ्ग कर सीख भजनकी रीत।
काम क्रोध मद लोभमें गयी आर्बल बीत॥

धन विद्या गुन आयु बल यह न बड़प्पन देत।
नारायण सोई बड़ा जाका हरि सों हेत॥
नारायण हरिभजनमें तूँ जिन देर लगाय।
का जाने या देरमें श्वासा रहे कि जाय॥
नारायण बिनु बोधके पण्डित पशू समान।
तासो अति मूरख भला जो सुमरे भगवान॥
विद्या वित्त स्वरूप गुण सुत दारा सुख भोग।
नारायण हरि भक्ति बिनु यह सब ही है रोग॥
सन्त सभा झाँकी नहीं किया न हरि गुन गान।
नारायण फिर कौन बिध तू चाहत कल्यान॥

नारायण सुख भोगमें मस्त सभी संसार ।
कोउ मस्त वा मौजमें देखो आँख पसार ।।
दो बातनको भूल मत जो चाहत कल्यान ।
नारायण इक मौतको दूजे श्रीभगवान ।।
सन्त जगतमें सो सुखी मैं मेरीका त्याग ।
नारायण गोविन्द पद दृढ़ राखत अनुराग ।।
नारायण हरि लगनमें यह पाँचो न सुहात ।
विषय भोग निद्रा हँसी जगत प्रीत बहु बात ।।
सेवाको दोनों भले एक सन्त इक राम ।
राम जु दाता मुक्तिके सन्त जपावें नाम ।।

साधन यज्ञ अनेकसे सरै न एको काम ।
बिना भक्ति भगवन्तके जिउ न लहै विश्राम ।।
ग्रन्थ पन्थ सब जगतके बात बतावत तीन ।
राम हृदय, मनमें दया तन सेवामें लीन ।।
तन पवित्र सेवा किये धन पवित्र किये दान ।
मन पवित्र हरि भजनतें होत त्रिविध कल्यान ।।
सकल रैन सोवत गई उग्या चहैं अब भान ।
अब भी भज भगवानको जो चाहै कल्यान ।।
मन मगरूरी त्यागकर रटिये कृष्ण मुरार ।
नौका बीच समुद्रके होय भजनसे पार ।।

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहि राम॥
राम नाम जपते रहो जब लगि घटमें प्रान।
कबहुँ तो दीनदयालुके भनक परैगी कान॥
एक भरोसा एक बल एक आस विश्वास।
स्वाति सलिल हरि नाम है चातक तुलसीदास॥
पढ़ पढ़के सब जग मुवा पण्डित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेमके पढ़ै सो पण्डित होय॥
हाथी घोड़े धन घना चन्द्रमुखी बहु नार।
नाम बिना यमलोकमें पावत दुःख अपार॥

* मनहर कवित्त*

घरी घरी घटत छीजत जात छिन-छिन
भीजत हि गलि जात माटीको सो ढेल है,
मुकुतिके द्वार आइ सावधान क्यों न होइ
बेर-बेर चढ़त न तियाको सो तेल है।
करि ले सुकृति हरि भजि ले अखण्ड नर
याहीमें अन्तर परै यामे ब्रह्म मेल है,
मानुष जनम यह जीत भावै हार अब
सुन्दर कहत यामें जुवाको सो खेल है॥

किरीट सवैया

पाइ अमोलक देह यहै नर क्यूँ न बिचार करै दिल अन्दर
कामहु क्रोधहु लोभहु मोहहु लूटत है दसहू दिसि द्वन्द्वर।
तूँ अब बांछत है सुरलोकहि कालहु पाइ परैं सु पुरन्दर
छाँड़ि कुबुद्धि सुबुद्धि हृदै धरि आतमराम भजै किन सुन्दर॥

मत्तगजेन्द्र सवैया

ग्रीव त्वचा कटि है लटकी कच हूँ पलटे अजहूँ रत वामी
दन्त गये मुखके उखरे नखरे न गये सु खरो खर कामी।
कम्पत देह सनेह सुदम्पति संपति जंपति है निसि जामी
सुन्दर अंतहु भौन तज्यो न भज्यो भगवंत सु लौन हरामी॥

कौन कुबुद्धि भई घट अंदर तूँ अपने प्रभुसों मन चोरै
भूलि गयो विषयासुखमें सठ लालच लागि रयो अति थोरै।
ज्यों कोउ कंचन छार मिलावत ले करि पत्थरसों नग फोरै
सुन्दर या नरदेह अमोलक तीर लगी नउका कत बोरै॥
देह सनेह न छाड़त है नर जानत है थिर है यह देहा
छीजत जात घटै दिन ही दिन दीसत है घटको नित छेहा।
काल अचानक आइ गहे कर ढाइ गिराइ करै तनु खेहा
सुन्दर जानि यहै निहचै धरि एक निरंजन सो कर नेहा॥
तूँ कछु और बिचारत है नर तेरो बिचार धर्योहि रहैगो
कोटि उपाय करै धनके हित भाग लिखो तितनोहि लहैगो।

भोर कि साँझ घरी पल माँझ सु काल अचानक आइ गहैगो
राम भज्यो न कियो कछु सुकृत सुन्दर यों पछताइ रहैगो ॥
सोइ रह्यो कहाँ गाफिल ह्वै करि तो सिर ऊपर काल दहारै
धामस-धूमस लागि रह्यो सठ आइ अचानक तोहिं पछारै ।
ज्यों वनमें मृग कूदत फाँदत चित्र गले नखसूँ उर फारै
सुन्दर काल डरै जिनके डर ता प्रभुको कहु क्यों न सँभारै ॥
संत सदा उपदेश बतावत केस सबै सिर सेत भये हैं
तूँ ममता अजहूँ नहिं छाँड़त मौतहु आइ सँदेस दये हैं ।
आज कि काल चलै उठि मूरख तेरेहि देखत केते गये हैं
सुन्दर क्यों नहिं राम सम्हारत या जगमें कहु कौन रये हैं ॥

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥